अक्टूबरः 2021 वर्ष : 5 अंक : 1

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

संस्थान का मासिक समाचार, सितंबर 2021 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

सर्वप्रथम मैं आप सभी को हिन्दी दिवस की बधाई देता हूँ।

14 सितंबर का दिन हम सभी भारतीयों के लिए बेहद गौरवमयी दिन है स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत का संविधान तैयार करने के लिए संविधान का गठन हुआ। लेकिन भारत की कौन सी राष्ट्रभाषा चुनी जाएगी, ये एक महत्वपूर्ण मुद्दा सामने आया और तब हिंदी और अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में चुना गया। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा के एक मत से निर्णय हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी और तब हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला। तब से हर साल इस दिन को हिंदी दिवस के तौर पर मनाया जाता है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमारी वर्तमान सरकार का कदम सराहनीय है। आज देश के नेता विदेशों में जाकर भी हिंदी में वक्तव्य को महत्ता दे रहे हैं। ऐसा इसिलए किया जा रहा है ताकि भारत के साथ-साथ विश्व स्तर पर भी हिंदी भाषा के महत्व को स्थापित किया जाए। यह हमारी सरकार के प्रयासों का ही नतीजा है कि हिंदी बोलने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि देखी जा रही है।

प्रस्तुत सितंबर 2021 अंक में संस्थान में हुये अगस्त माह के कार्यकलापों का विवरण दिया गया है। इस महीने संस्थान में दिनांक 15 अगस्त 2021 को आजादी का अमृत महोत्सव और देश का 75वाँ स्वाधीनता दिवस मनाया गया जिसमें सामाजिक दूरी बनाए रखने का पूरा प्रयास किया गया था।

अंत में, आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में हिन्दी सप्ताह 2021 का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में दिनांक 14-20 सितंबर 2021 के दौरान हिंदी सप्ताह आयोजित किया गया। प्रत्येक वर्ष संस्थान में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने की दिशा में हिंदी सप्ताह का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष कोरोना महामारी के कारण हिन्दी सप्ताह का उदघाटन तथा अन्य प्रतियोगिताएं ऑनलाइन मोड में 'ज़ूम मीट' प्लेटफार्म पर आयोजित किया गया। हिन्दी सप्ताह का उदघाटन दिनांक 14 सितंबर 2021 को किया गया। उदघाटन समारोह में संस्थान मुख्यालय कर्मियों के साथ इसके क्षेत्रीय केन्द्रों/स्टेशनों (इलाहाबाद, बैंगलोर, गुवाहाटी, वडोदरा, कोलकाता और कोच्चि) ने भी भाग लिया। इस उद्घाटन समारोह की मुख्य अतिथि डॉ. (श्रीमती) विजया लक्ष्मी सक्सेना, महासचिव (निर्वाचित), भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था थीं। इस अवसर पर डॉ. अशोक सक्सेना, पूर्व महासचिव,

भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था भी उपस्थित थे। उद्घाटन समारोह के स्वागत अभिभाषण में हिन्दी के सर्वकार्याधिकारी, डॉ. एस सामन्ता ने संस्थान के हिन्दी कार्यों की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होने संस्थान को प्राप्त पुरस्कारों जैसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का सरदार पटेल सर्वश्रेष्ठ संस्थान पुरस्कार, रफी अहमद श्रेष्ठ वैज्ञानिक पुरस्कार और नीलांजलि पत्रिका को प्रोत्साहन पुरस्कार के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि संस्थान का हिन्दी वृत्तचित्र विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वेबसाइट पर अपलोड किए गए है जो हमारे संस्थान के लिए गर्व की बात है। संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने सर्वप्रथम सभी को हिन्दी दिवस की बधाई दी और कहा कि यद्यपि संस्थान के हिन्दी संबंधी कार्यों में बहुत विविधता है और उनकी संख्या में भी बढ़ोतरी है पर हमें इस दिशा में और भी प्रयास करना चाहिए। उन्होने बताया कि यदि शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करना है तो मातृभाषा को मजबूत करना चाहिए। चूंकि देश में हिन्दी बोलने वालों की संख्या बहुत अधिक है इसलिए

इसका विकास और सुदृढीकरण अत्यंत आवश्यक है। हमारे देश के किसानों में प्रौद्योगिकी विस्तार के लिए भी हिन्दी को बढ़ावा देना चाहिए। मात्स्यिकी विज्ञान और हिन्दी का सम्मिलन किसानों के विकास के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करेगा। मुख्य अतिथि डॉ. (श्रीमती) विजया लक्ष्मी सक्सेना, महासचिव (निर्वाचित), भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था ने संस्थान के हिंदी प्रकाशनों की सराहना की। उन्होने कहा कि कोरोना महामारी में भी सिफ़री ने अपने अथक

प्रयास से संस्थान के कार्यों में वृद्धि की है। हिन्दी को बढ़ावा देने में सोशल मीडिया का विशेष महत्व है और सरल हिन्दी के प्रयोग से इसके विस्तार में बहुत सहायता मिलेगी। उन्होने महान दार्शनिक और समाज सुधारक, केशव चंद्रसेन की उक्ति का संदर्भ दिया जिसके अनुसार, देश में केवल हिन्दी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है इसलिए इसे ही राजभाषा होना चाहिए। डॉ. अशोक सक्सेना, पूर्व महासचिव, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था ने सर्वप्रथम निदेशक महोदय को पुरस्कार मिलने पर बधाई दी। उन्होने संस्थान के हिन्दी कार्यों और प्रकाशनों की सराहना की। उन्होने हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। संस्थान के सह-निदेशक एवं कुलसचिव, श्री राजीव लाल ने कहा की चूंकि सितंबर माह में देश भर में हिन्दी सप्ताह अथवा पखवाड़ा अथवा मास मनाया जाता है इसलिए सितंबर महीना एक प्रकार से हिन्दी के लिए ही समर्पित है। हिन्दी एक समृद्ध भाषा है जिसमें कोई मूक स्वर या व्यंजन का उपयोग नहीं किया जाता है। बहुत से ऐसे देश है जैसे सूरीनाम आदि जहां रेडियो और टीवी चैनल हिन्दी प्रसारण करते हैं। हमारी शिक्षा नीति में भी हिन्दी की भूमिका महत्वपूर्ण रखी गई है इसलिए हमें भी इसके प्रचार-प्रसार हेतु अधिक सचेष्ट होना चाहिए। इनके अलावा सभी प्रभागाध्यक्षों और क्षेत्रीय केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिकों ने हिन्दी प्रचार-प्रसार पर ज़ोर दिया। उन्होने कहा कि हिन्दी जनमानस की भाषा है और मत्स्य पालकों/मछुआरों तक हमारे संस्थान के तकनीकों और प्रौद्योगिकी को हिन्दी भाषा के माध्यम से पहुंचाया जा सकता है। इस अवसर पर संस्थान की मासिक पत्रिका, अगस्त 2021 तथा "अलवण जल एवं मत्स्य पारिस्थितिकी" पुस्तक का विमोचन किया गया। इस समारोह में मंच संचालन, डॉ. (श्रीमती) सुमन कुमारी, वैज्ञानिक ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती सुमेधा दास, तकनीकी सहायक ने प्रस्तुत किया।

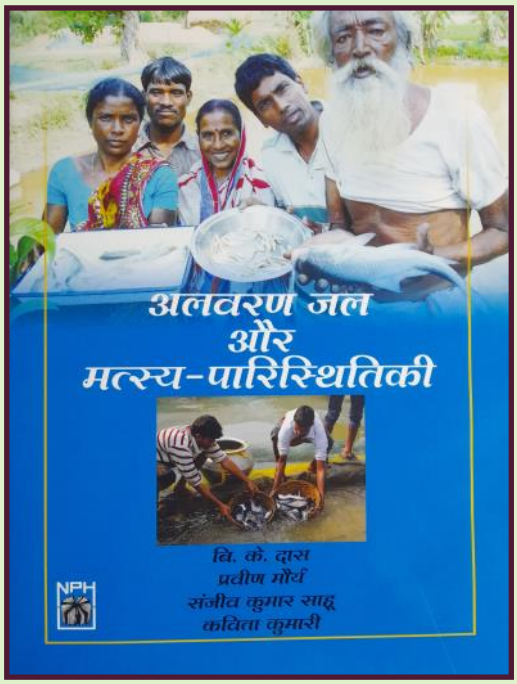

गत पाँच वर्षों में संस्थान में हिन्दी कार्य का संक्षिप्त विवरण

2016 -17

वार्षिक प्रतिवेदन, सिफरी समाचार के दो अंक ,

2017 -18

वार्षिक प्रतिवेदन, सिफरी समाचार(2) 15 सितम्बर 2017 को एक दिवासीय वैज्ञानिक कार्यशाला "अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी की वर्त्तमान अवस्था एवं संभावनाएं" का आयोजन

हिन्दी पुस्तक का प्रकाशन

डा. बि. के. दास, डा. एन. पी. श्रीवास्तव, डा एस. सामन्ता, मो. कासिम, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास : सम्पादन, Vol-9, Book- *नीलांजलि.*

सिफरी मासिक समाचार

इस वर्ष से संस्थान ने अपनी एक हिन्दी मासिक समाचार पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया और इस वर्ष के दौरान 6 अंको का प्रकाशन किया गया

पोस्टर का हिन्दी अनुवाद

मोतीहारी, बिहार में दिनांक 18 से 22 अप्रैल 2017 में आयोजित कृषि मेला हेतु पोस्टरों का हिन्दी अनुवाद ।

पैम्फलेट/ब्रोसर

"जलाशयों से मात्स्यिकी आंकड़ा संचयन के लिये ई-डास प्रणाली: एक नवीन एवं उन्नत प्रयोग'' का हिन्दी अनुवाद

अंतस्थलीय खुला जलीय संसाधनों में पिंजरों में पंगास (पंगेशियानोडोन हाइपोथेलमस) मछली पालन पद्धति

संस्थान की निक्रा परियोजना पर तैयार विडियो जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से निबटने हेतु बाढ़कृत आर्द्रक्षेत्रों में पेन में मछली पालन का हिन्दी में अनुवाद किया गया।

संस्थान के प्रकाशन "Small Indigenous Fish (SIF) For Livelihood And Nutritional Security: Awareness and sensitization Initiatives by ICAR-CIFRI (आजीविका एवं पोषण सुरक्षा हेतु छोटी देशी मछली पालन की ओर भाकृअनुप-सिफरी के जनजागरूकता कार्य) का हिन्दी रूपान्तर एवं द्विभाषी संपादन।

वर्ष 2018– 2019

वार्षिक प्रतिवेदन, सिफरी समाचार(2) सिफरी मासिक समाचार (10)

वैज्ञानिककार्यशाला

16 March 2019 को एक दिवासीय वैज्ञानिककार्यशाला "जीविकोपार्जन में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी की भूमिका " का आयोजन

हिन्दी पुस्तक का प्रकाशन

बि. के . दास, प्रवीण मौर्य, संजीव कुमार साहू, सुमन कुमारी. "समाजिक उत्थान में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की महत्ता." Pp 145

बि. के . दास, प्रवीण मौर्य, संजीव कुमार साहू. "मात्स्यिकी वर्धन में जलीय पारिस्थितिकी का योगदान". Pp210

वर्ष 2019 -2020

वार्षिक प्रतिवेदन, सिफरी समाचार(2), सिफरी मासिक समाचार(9)

वैज्ञानिककार्यशाला

13 सितम्बर 2019 को एक दिवासीय वैज्ञानिककार्यशाला “अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी : संरक्षण, संवर्धन एवं जीविकोपार्जन ” का आयोजन

बसंत कुमार दास, उत्तम सरकार, सुमन कुमारी, गुंजन कर्नाटक, राजू बैठा (2019) : “अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का विश्लेषण”

हिन्दी पुस्तक का प्रकाशन

बि. के . दास, प्रवीण मौर्य, संजीव कुमार साहू, सुमन कुमारी.(2019) “अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी: संरक्षण, संवर्थन, एवं जीववकोपार्जन”

बि. के . दास, प्रवीण मौर्य, संजीव कुमार साहू (2019) “अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी का संरक्षण समस्याएं और सम्भावनाएं”

बसंत कुमार दास, उत्तम सरकार, सुमन कुमारी, गुंजन कर्नाटक, राजू बैठा (2019) : “अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का विश्लेषण”

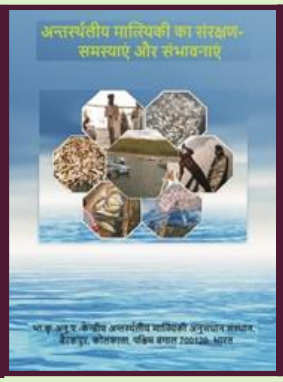

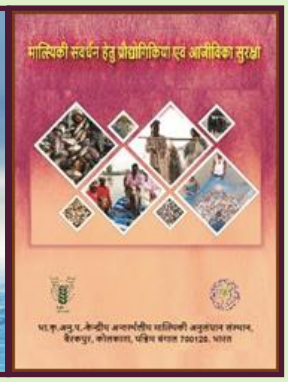

वर्ष 2020-2021

वार्षिक प्रतिवेदन, सिफरी समाचार(2), सिफरी मासिक समाचार(12)

वृत्तचित्र

गंगा नदी में जैव विविधता पुनर्स्थापन हेतु वाइल्ड मछलियों का जर्मप्लाज्म प्रजनन

अंतस्थलीय जलक्षेत्रों के पिंजरे में मछली पालन हेतु प्रजाति विविधता

हिन्दी पुस्तक का प्रकाशन

बि. के . दास, प्रवीण मौर्य, संजीव कुमार साहू, सुमन कुमारी.(2020) “अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी: संरक्षण, संवर्थन, एवं जीववकोपार्जन” (नरेन्द्र पब्लिशिंग हाउस)

बि. के . दास, प्रवीण मौर्य, संजीव कुमार साहू, कविता कुमारी (2020) “अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी का संरक्षण समस्याएं और सम्भावनाएं” (नरेन्द्र पब्लिशिंग हाउस)

बि. के . दास, व कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, संजीकविता कुमारी (2020)”अलवरण जल और मत्स्यपारिस्थितिकी”(नरेन्द्र पब्लिशिंग हाउस)

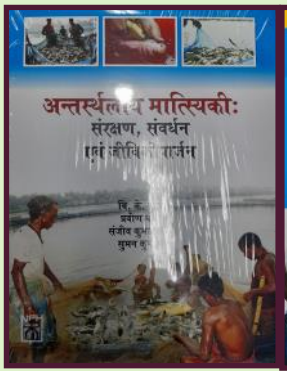

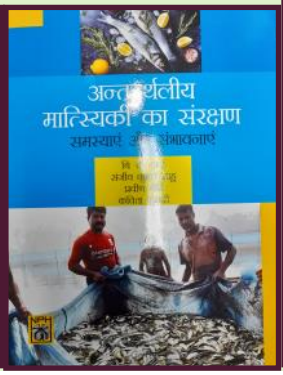

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा अनुसूचित जाति उप-योजना कार्यक्रम के तहत सुंदरबन के यास चक्रवात प्रभावित मछली किसानों को सहायता

चक्रवात यास ने सुंदरबन, तटीय ओडिशा और पश्चिम बंगाल को प्रमुख तौर पर प्रभावित किया है और इससे मत्स्य पालन और मवेशी सहित कृषि फसलों को बहुत ही नुकसान पहुंचा है। सिफ़री ने मछुआरों को इस संकट से उबारने के लिए अनुसूचित जाति उप-योजना कार्यक्रम के तहत उनके छोटे और सीमावर्ती तालाबों में मत्स्य पालन के लिए आवश्यक सामान प्रदान किया जिससे इन किसानों की आजीविका का पुनरुद्धार हो सके। इस दिशा में संस्थान ने दिनांक 2-3 सितंबर 2021 को सुंदरबन के कुलटोली में एक जन जागरूकता शिविर-सह-आदान वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर गोसाबा और बासंती ब्लॉक के 14 ग्राम पंचायतों के अधीनस्थ 32 बस्तियों में मछुआरों को उनके घर के पीछे स्थित 0.02 हेक्टेयर से 0.04 हेक्टेयर तालाब में मछली पालन के लिए सहायता सामाग्री प्रदान की गई। इस दो-दिवसीय कार्यक्रम में संस्थान के साथ रोटरी क्लब ऑफ भुवनेश्वर रॉयल और कुलटोली मिलन तीर्थ सोसाइटी ने सहयोग दिया जिसका आयोजन कुलटोली के नारायणतला रामकृष्ण विद्या मंदिर खेल के मैदान में किया गया। इसमें 500 लाभार्थियों (प्रत्येक दिन - 250 लाभार्थी) ने भाग लिया जिनमें 20 प्रतिशत महिलायें भी शामिल थी। प्रत्येक मछुआरे को 105 किलो चारा मछली, 750 बड़ी अंगुलिकाएँ और 20

किलो चूना दिया गया। तालाब के जल की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अंगुलिका संचयन के एक सप्ताह पहले (25 अगस्त 2021) ही तालाब में चूना डाल दिया गया था।

माननीय प्रधानमंत्री की लक्षित योजना, "किसानों की आय दोगुनी करने" की दिशा में 32 लाख रुपये के निवेश से रु. 2.0 करोड़ राजस्व प्राप्ति का लक्ष्य रखा गया था पर वास्तविकता में चार गुना राजस्व प्राप्ति हुई है। इसके अलावा, इसका उद्देश्य संस्थान द्वारा अनुसूचित जाति उप-योजना कार्यक्रम द्वारा मछुआरों की आजीविका को पुनर्जीवित करना भी था। संस्थान के निदेशक, डॉ बि के दास ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया और सभा को संबोधित किया। उन्होंने मछुआरों को यह बताया कि किस प्रकार से मछली पालन द्वारा आय और आजीविका वृद्धि के साथ स्थायी कृषि पद्धतियों की सहायता से राजस्व में वृद्धि की जा सकती है। सिफ़री ने इससे पहले भी फानी चक्रवात प्रभावित मछुआरों को मत्स्य पालन पुनरुद्धार हेतु सहायता प्रदान किया हैं और वे इससे बहुत लाभान्वित भी हुए हैं। यास चक्रवात से तालाबों में खाराजल के प्रवेश के कारण मछलियों को बहुत नुकसान पहुंचा है। कुलटोली मिलन तीर्थ सोसाइटी के संस्थापक अध्यक्ष ने सिफ़री के इस पहल की बहुत सराहना की है। उन्होने कहा कि सुंदरबन क्षेत्र में यह प्रथम प्रयास है, जिसमें मछली पालन के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर लाभार्थियों को शामिल किया गया है और इससे उनकी आजीविका पुनरुद्धार में बहुत सहायता होगी। इस अवसर पर डॉ. ए. के दास, प्रभारी, प्रशिक्षण एवं विस्तार इकाई तथा डॉ. पी.के. परिदा, नोडल अधिकारी, संस्थान अनुसूचित जाति उप-योजना कार्यक्रम भी उपस्थित थे। उन्होने यह बताया कि ऐसे कार्यक्रम किस प्रकार से मछुआरों को लाभान्वित कर सकते हैं। कार्यक्रम का समन्वय और प्रबंधन कोविड प्रोटोकॉल का पालन करते हुए किया गया था। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्री सुजीत चौधरी, डॉ ए साहा और डॉ श्रेया भट्टाचार्य तथा मिलन तीर्थ सोसाइटी के कर्मचारियों ने सहयोग दिया।

जनजातीय उप योजना (टीएसपी) कार्यक्रम के तहत केरल के जलाशय मछुआरों को कोराकल वितरण

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के कोच्चि अनुसंधान स्टेशन ने निदेशक डॉ. बि. के. दास, के सक्षम मार्गदर्शन में जनजातीय उप योजना (टीएसपी) कार्यक्रम के तहत केरल में दो जलाशयों के आदिवासी मछुआरों को चार फाइबरग्लास फिशिंग कोराकल वितरित किए।

राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस, 10 जुलाई, 2021 के अवसर पर, वज़ानी बांध हरिजन-गिरिजन मत्स्य सहकारी समिति, वज़ानी, त्रिशूर जिले के मछुआरों को मछली पकड़ने के दो कोराकल वितरित किए गए। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री. टी वी सुनील कुमार, अध्यक्ष, थेक्कुमकारा ग्राम पंचायत, वज़ानी, त्रिशूर, केरल द्वारा किया गया। अन्य अतिथियों में श्रीमती. शाइनी जैकब (वार्ड सदस्य, वज़ानी), और श्री. पी गंगाधरन (अध्यक्ष, वज़ानी बांध हरिजन- गिरिजन मत्स्य सहकारी समिति) शामिल थे।

1 सितंबर, 2021 को कांजीरापुझा एससी / एसटी मत्स्य सहकारी समिति, कांजीरापुझा, पलक्कड़ जिले के आदिवासी मछुआरों को दो कोराकल मछली पकड़ने के लिए वितरित किए गए। कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमती सती राजीवन (अध्यक्ष, कांजीरापुझा ग्राम पंचायत) द्वारा किया गया था। कार्यक्रम में श्री. सिद्दीकी चेप्पादान (उपाध्यक्ष, कांजीरापुझा ग्राम पंचायत), और श्री. श्रीधरन (मत्स्य विकास अधिकारी) भी शामिल थे।

डॉ. दीपा सुधीसन (वैज्ञानिक) और डॉ. थंकम थेरेसा पॉल (वैज्ञानिक) और श्री एस मनोहरन (सीटीओ) और श्री पी.वी. शाजिल (तकनीशियन) की मदद से कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी और एएफडीसी लिमिटेड, गुवाहाटी के सहयोग से 'बील में संवर्धित मछली उत्पादन के लिए संलग्नक कल्चर ' पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने एएफडीसी लिमिटेड के सहयोग से दिनांक 01.09.21 को एक्वाकल्चर में सिस्टम विविधीकरण पर राष्ट्रीय अभियान के तहत "बील में संवर्धित मछली उत्पादन के लिए संलग्नक कल्चर"

पर घोराजन बील, अमिनगांव में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में कुल 42 बील मछुआरों, उद्यमियों और सहकारी समिति, कामरूप (ग्रामीण), असम के सदस्यों ने भाग लिया।

डॉ. दीपेश देबनाथ, गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कार्यक्रम में सभी मेहमानों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और उनसे तकनीकी सत्र में सक्रिय रूप से भाग लेने का अनुरोध किया। डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के प्रभारी ने संक्षेप में विभिन्न उपायों के बारे में बताया जो मछली स्टॉक वृद्धि, आवास वृद्धि और बाड़े (पेन और केज) का कल्चर जैसे विभिन्न वृद्धि विकल्पों को अपनाकर बील मत्स्य उत्पादन को बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि एनक्लोजर कल्चर प्रौद्योगिकियों में बील के प्रति यूनिट क्षेत्र मछली उत्पादन बढ़ाने और बील मछुआरों की आजीविका में सुधार करने की उच्च क्षमता है। उन्होंने एएफडीसी लिमिटेड और संस्थान से बील मछुआरों को सभी तकनीकी सहायता का आश्वासन दिया। श्रीमती अनुराधा अधिकारी सरमा, एमडी, एएफडीसी लिमिटेड और कार्यक्रम की मुख्य अतिथि ने एएफडीसी लिमिटेड के साथ जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने के लिए संस्थान को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि हाल के दिनों में, संस्थान ने विभिन्न बील में सीआईएफआरआई एचडीपीई पेन, मछली बीज और चारा के रूप में, सहायता प्रदान किया और मछली उत्पादन में महत्वपूर्ण सुधार किया। उन्होंने प्रतिभागियों से बील को वैज्ञानिक रूप से प्रबंधित करने का अनुरोध किया। श्री लोहित देवरी ने जागरूकता कार्यक्रम के लिए बील का चयन करने के लिए संस्थान और एएफडीसी लिमिटेड का आभार व्यक्त किया और क्षेत्र में बील मत्स्य पालन के विकास के लिए भविष्य में इस तरह के और कार्यक्रम चलाने का अनुरोध किया। सहकारी समिति, अमिनगांव के अध्यक्ष श्री कुमुद नाथ ने घोराजन बील के एक हिस्से को विकसित करने के लिए पहल की और संस्थान से तकनीकी सहायता मांगी। सोसाइटी के सदस्य श्री रिपुंजन दत्ता ने घोरजन बील में एनक्लोजर कल्चर और एक्वा-पर्यटन के माध्यम से मत्स्य पालन में सुधार के लिए अपनी भविष्य की योजना के बारे में चर्चा की। श्री बिरिंची अधिकारी, एईई, निचला असम जोन ने बील मत्स्य प्रबंधन के लिए प्रतिभागियों को प्रेरित करने के लिए घोरजन बील में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने के लिए संस्थान को धन्यवाद दिया। उन्होंने बील मछुआरों की आय बढ़ाने के लिए बील मत्स्य पालन और सुअर-सह-मछली और बतख-सह-मछली पालन प्रणाली जैसी एकीकृत प्रौद्योगिकियों में गहरी रुचि दिखाने के लिए प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया। तकनीकी सत्र में डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, डॉ. डी. देबनाथ और सुश्री नीति शर्मा ने मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए बाढ़ के मैदानों में विविध उत्पादन प्रणालियों के रूप में पेन और केज कल्चर सिस्टम सहित बील मत्स्य प्रबंधन के लिए विभिन्न विकल्पों पर चर्चा की।

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा आयोजित "त्रिपुरा के डुंबूर जलाशय से मछली उत्पादन में वृद्धि के लिए केज कल्चर " पर जागरूकता कार्यक्रम

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी और त्रिपुरा मात्स्यिकी विभाग, भारत सरकार के सहयोग से 07.09.2021 को त्रिपुरा के धलाई जिले के गंडाचेरा में "त्रिपुरा के डंबूर जलाशय में मछली उत्पादन में वृद्धि के लिए केज कल्चर" पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जलाशय से औसत मछली उत्पादन लगभग 120 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष (2001-2020) है, जो संभावित उत्पादन से कम है। इस जागरूकता कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य स्टॉक वृद्धि और पिंजरा पालन जैसे वैज्ञानिक दृष्टिकोणों को लागू करके जलाशय से मछली उत्पादन को बढ़ाना था। संस्थान के निदेशक और एनईएच घटक के परियोजना समन्वयक डॉ. बि.के. दास के नेतृत्व में कार्यक्रम का आयोजन किया गया । डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रमुख और एनईएच के प्रधान अन्वेषक ने गुवाहाटी से कार्यक्रम का समन्वय किया। श्री डी. के. चकमा, टीसीएस, निदेशक, मत्स्य विभाग, त्रिपुरा सरकार ने डंबूर जलाशय में पिंजरा पालन सहित चल रही गतिविधियों को पूरा करने के लिए संस्थान को बहुमूल्य सहायता प्रदान की। तकनीकी सत्र में डॉ. श्यामल चंद्र सुक्ला दास, वैज्ञानिक और श्री बिपुल चंद्र रे, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी; श्री नंदा गोपाल नोआटिया, डीडीएफ (सी एंड डी, नोडल अधिकारी), मत्स्य निदेशालय; श्री मदन त्रिपुरा, एस एफ, जतनबाड़ी/गंडाचेरा; डॉ. चंदन देबनाथ, वैज्ञानिक, एनईएच क्षेत्र के लिए आईसीएआर अनुसंधान परिसर, त्रिपुरा केंद्र, लेम्बुचेरा; श्री रणदीप साहा और श्याम सुंदर दास, मत्स्य अधिकारी, गंडाचेर्रा ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। जागरूकता कार्यक्रम में कुल 50 मछुआरों और अधिकारियों ने भाग लिया।

संस्थान द्वारा असम के बामुनी और चरण बील में फील्ड दिवस का आयोजन

संस्थान द्वारा असम के बामुनी और चरण बील में फील्ड दिवस का आयोजन संस्थान के एनईएच घटक के तहत असम के बामुनी बील (कामरूप ग्रामीण जिला) और चरण बील (बक्सा जिला) में एचडीपीई पेन तकनीक का डॉ बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर के ऊर्जस्वी नेतृत्व संस्थान द्वारा शुरू की गई आउटरीच गतिविधियों के हिस्से के रूप में और डॉ जेके जेना, उपमहानिदेशक (मत्स्यिकी विज्ञान), आईसीएआर, नई दिल्ली, के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया। प्रत्येक बील में खाद्य मत्स्य उत्पादन के लिए 3000 m2 (प्रत्येक क्षेत्र 500m2 के 6 पेन) के क्षेत्र में पेन बाड़े स्थापित किए गये। मार्च, 2021 के दौरान बामुनी और चरण बील में लेबियो रोहिता (औसत लंबाई, 12.25 सेमी; औसत वजन, 22.78 ग्राम) और सिरहिनस मृगला (औसत लंबाई, 13.03 सेमी; औसत वजन, 22.24 ग्राम) की अंगुलिकाओ के साथ पेन को स्टॉक किया गया । दोनों प्रजातियों का स्टॉक दर 3, 6 और 9 प्रति वर्ग मीटर डुप्लिकेट में थी । पालन अवधि 6 महीने थी। प्रग्रहण के समय, एल. रोहिता का आकार वजन में 55-415 ग्राम और लंबाई में 16-30 सेमी तक था; सी. मृगला का आकार वजन में 104-309 ग्राम और लंबाई में 18-27 सेमी तक थी। बामुनी और चरण बील से लगभग 3.0-3.2 टन एल. रोहिता और 2.2-2.5 टन सी. मृगला पकड़ी गई। पेन से मछली के अंतिम प्रग्रहण के अवसर पर, 7 सितंबर, 2021 को बामुनी बील में और 8 सितंबर, 2021 को चरण बील में फील्ड दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम डॉ बि. के. दास, निदेशक, संस्थान के निदेशक डॉ. बी के भट्टाचार्य, प्रमुख, आईसीएआर-सीआईएफआरआई क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी और प्रधान अन्वेषक एन ई एच परियोजना के समग्र मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सिमंकू बोरा, डॉ. प्रणब दास और श्री अनिल कुमार यादव, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। आदिवासी बील फिशर्स के बीच आईसीएआर-सीआईएफआरआई एचडीपीई पेन तकनीक का प्रदर्शन करने का मूल उद्देश्य इस तकनीक को लोकप्रिय बनाना और बील में पेन कल्चर के बारे में जागरूकता पैदा करना, साथ ही मछुआरों की आजीविका में सुधार करना था। बामुनी (65 परिवार) और चरण बील (140 परिवार) के कुल 205 आदिवासी परिवारों (बोडो समुदाय से संबंधित) ने इस कार्यक्रम से लाभ उठाया है। संबंधित बीलों की मीन पालन समिति के सचिवों ने इस सफल पहल के लिए निदेशकका बमुनी और चरण बील के मछुआरा समुदाय की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया।

संस्थान द्वारा ओडिशा के अनुसूचित जाति के मछुआरों को सजावटी मत्स्य पालन पर प्रशिक्षित किया गया

अनुसूचित जाति उपयोजना कार्यक्रम के तहत 13-17 सितंबर, 2021 के दौरान रोटरी क्लब, कटक के सहयोग से भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा "आजीविका संवर्धन और रोजगार सृजन के लिए अन्तर्स्थलीय खुले जल में सजावटी मछलियों का पालन" पर एक प्रशिक्षण

कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कटक, ओडिशा के सत्यभामापुर गांव (उत्कल गौरव श्री मधुसूदन दास के जन्म स्थान के लिए प्रसिद्ध) के कुल 17 अनुसूचित मछुआरों ने भाग लिया, उनमें से 9 महिलाएं थीं। प्रशिक्षण से पहले, ग्रामीणों के साथ "सजावटी मछली और आय सृजन में इसके महत्व" के बारे में संस्थान के निदेशक डॉ बि. के. दास ने सत्यभामापुर में एक प्रारंभिक बैठक और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। चर्चा के आधार पर, संस्थान ने उन्हें सजावटी मछलियों का पालन शुरू करने के लिए कल्चर टैंक, चारा और अन्य एक्वैरियम के सामान प्रदान किए। डॉ. दास ने मछुआरों को सजावटी मछली पालन की आवश्यकता के बारे में बताया और सजावटी मछली पालन में उद्यमिता विकास पर भी जोर दिया। प्रशिक्षण में, प्रशिक्षुओं ने एक्वैरियम के निर्माण, सजावटी मछलियों को संभालने, विभिन्न मछलियों के प्रजनन, (गप्पी, मौली, प्लेटी और स्वोर्डटेल) और अंडे की परतें (गोल्ड फिश, कोई कार्प) की प्रक्रिया सीखी। उन्हें फ़ीड (प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों) और मछली के भोजन के समय के बारे में भी सिखाया गया; सामान्य रोग और एक्वेरियम में सामान्य प्रबंधन प्रथाओं जैसे पानी का आदान-प्रदान, थर्मोस्टेट का उपयोग, एक्वेरियम में रखने के लिए सामान्य एक्वैरियम मछली का चयन आदि के साथ उनका उपचार भी उन्हें बताया गया। इसके अतिरिक्त, उनके लिए कोलकाता के सजावटी बाजार का एक दौरा भी आयोजित किया गया। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय बाजरा दिवस 17 सितंबर 2021 के अवसर पर प्रशिक्षुओं को बाजरा पाउडर और कुछ मूल्य वर्धित बाजरा उत्पाद वितरित किए गए। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन डॉ. पी.के. परिदा, सुश्री पी.आर. स्वैन और डॉ. एम. शाया देवी ने निदेशक महोदय के नेतृत्व में किया।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने पोषण वाटिका और वृक्षारोपण महाभियान मनाया

अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष 2023 के एक हिस्से के रूप में, पोषण वाटिका और वृक्षारोपण महाभियान पर एक कार्यक्रम 17 सितंबर 2021 को संस्थान मुख्यालय बैरकपुर और इसके क्षेत्रीय केंद्रों (प्रयागराज, गुवाहाटी, बेंगलुरु, वडोदरा और कोच्चि) में आयोजित किया गया।संस्थान मुख्यालय और इसके क्षेत्रीय केंद्रों में आम, अमरूद, लीची, नींबू, कटहल, अनार, जामुन, नारियल, बेल, कस्टर्ड सेब, जावा सेब, सपोटा और नीम, तुलसी जैसे फलों के 200 पौधे लगाए गए। इसके अलावा उत्तर 24 परगना और कोलाघाट हिल्सा फील्ड स्टेशन के फील्ड स्थानों जैसे चमरदाहा और चमता बील में 117 पौधे लगाए गए। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के नेतृत्व में संस्थान मुख्यालय बैरकपुर से किया गया। क्षेत्रीय केन्द्रों के प्रमुखों ने क्षेत्रीय केन्द्रों पर वृक्षारोपण अभियान का नेतृत्व किया। क्षेत्रीय केंद्रों में लगाए गए वृक्षारोपण का विवरण नीचे दिया गया है:

संस्थान मुख्यालय: 58

क्षेत्रीय केंद्र बेंगलुरु: 50

क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज: 36

क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी: 25 (फील्ड सेंटर घोरजन बील, उत्तरी गुवाहाटी में)

क्षेत्रीय केंद्र वडोदरा: 15

क्षेत्रीय केंद्र कोच्चि: 10

क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता: 6

उत्तर 24 परगना में चामरदाहा और चमता बील में प्रायोगिक स्टेशन और हिल्सा फील्ड स्टेशन, कोलाघाट, मिदनापुर, पश्चिम बंगाल में भी वृक्षारोपण किया गया। इन तीन स्थानों में कुल 117 पौधे लगाए गए।

उस दिन जागरूकता बैठक आयोजित की गई जिसमें संस्थान के सभी स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने स्वस्थ जीवन के लिए अपने दैनिक आहार में बाजरा को शामिल करने के महत्व और हर घर में बाजरा उगाने की आवश्यकता के बारे में कर्मचारियों को अवगत कराया। इस अवसर पर बाजरे के उत्पादों का वितरण भी किया गया।

पौधा रोपण के अलावा पश्चिम बंगाल के चमरदाहा और चमता बील, असम के घोरजन बील, प्रयागराज के रसूलाबाद घाट, क्षेत्रीय केंद्र, बंगलौर में बाजरा उत्पादों के माध्यम से पोषण पर जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया और इस अवसर पर विभिन्न मछुआरों में बाजरा उत्पादों को भी वितरित किया गया।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने 17.09.21 को घोराजन बील, कामरूप, असम में अंतर्राष्ट्रीय बाजरा और वृक्षारोपण वर्ष मनाया

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने असम मत्स्य विकास निगम लिमिटेड और त्रिमूर्ति बहुउद्देशीय कृषि सहकारी समिति (TMFCS), उत्तर गुवाहाटी के अधिकारियों और मछुआरों के सक्रिय समर्थन के साथ घोराजन बील, कामरूप, असम में अंतर्राष्ट्रीय बाजरा और वृक्षारोपण वर्ष के अवसर पर एक क्षेत्रीय कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के दौरान,

घोराजन बील के तट पर बागवानी अनुसंधान केंद्र, असम कृषि विश्वविद्यालय, काहिकुची, गुवाहाटी से खरीदे गए असम नींबू (साइट्रस लिमोन) और लीची (लीची चिनेंसिस) के 25 पौधे लगाए गए। बाजरा के पोषक मूल्य के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए प्रतिभागियों के बीच ज्वार का आटा और मल्टीग्रेन बिस्कुट वितरित किए गए। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के प्रभारी और श्री बी. अधिकारी, सहायक कार्यकारी अभियंता, एएफडीसी लिमिटेड, गुवाहाटी द्वारा किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के समग्र मार्गदर्शन में कार्यक्रम आयोजित किया गया। क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. देबनाथ, डॉ. एस. बोरा, वैज्ञानिक, ने कार्यक्रम के आयोजन में सहायता की। टीएमएफसीएस के श्री लोहित देउरी ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। अन्य प्रतिभागियों के रूप में दीप कुमार मेधी, कृष्णा दास, रूना लस्कर, प्रियंका बोरा, नयनमन दास, अंजन सरमा, एएफडीसी लिमिटेड के ज्योतिर्मय डोले और घोरजन बील के कुछ मछुआरे शामिल थे।

अनुसूचित जनजाति घटक के तहत महिलाओं के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित

अनुसूचित जनजाति घटक (एसटीसी) के तहत भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर पांच दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन 21 सितंबर, 2021 को संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल के मालदा जिले से कुल 39 महिला मछुआरों ने भाग लिया। मत्स्य पालन में स्थायी तरीके से वृद्धि करने के लिए, प्रबंधन रणनीति के मूल्यांकन और सुधार के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र में निदेशक डॉ. बि. के. दास ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और उन्हें रोजगार और आजीविका सुरक्षा के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के ज्ञान और कौशल को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रशिक्षुओं की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आकलन करने के बाद प्रशिक्षण कक्षाएं शुरू की गई । इस क्षमता निर्माण कार्यक्रम में मछली पालन के विभिन्न विषयों जैसे तालाब निर्माण और तैयारी, जल गुणवत्ता प्रबंधन, प्रेरित प्रजनन तकनीक, मिश्रित मछली पालन, नर्सरी में मछली पालन और तालाब प्रबंधन, एसआईएफ के साथ मछली की पॉलीकल्चर पर ज्ञान और कौशल प्रदान किया गया। मछली रोग प्रबंधन, चारा तैयार करना और **सजावटी** मछली पालन तकनीक भी उन्हें बताया गया। प्रशिक्षुओं का जल गुणवत्ता विश्लेषण पर व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र भी हुआ । अन्तर्स्थलीय जल में कल्चर प्रणाली के बारे में एक समग्र अभिविन्यास देने के लिए पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि में महिला प्रशिक्षुओं के लिए एक फील्ड एक्सपोजर दौरा भी आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन डॉ. अपर्णा रॉय, डॉ. पी.के. परिदा, डॉ. सजीना ए.एम. और डॉ. एम. शाया देवी द्वारा किया गया।

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा "गंगा नदी में हिल्सा और डॉल्फिन संरक्षण" पर जागरूकता कार्यक्रम

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने पश्चिम बंगाल के फरक्का (मुर्शिदाबाद जिला) में "गंगा नदी में हिल्सा और डॉल्फिन संरक्षण" पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा अभियान (एनएमसीजी) कार्यक्रम के तहत दिनांक 20 सितंबर 2021 को आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य थे : i) गंगा नदी में, विशेष तौर पर फरक्का में हिलसा और डॉल्फिन मछलियों के संरक्षण के प्रति मछुआरों को जागरूक करना, तथा ii) गंगा नदी को स्वच्छ करने के प्रति जागरूकता पैदा करना। इस समारोह में डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान; श्री आर. अझगेसन, महाप्रबंधक, फरक्का बैराज प्राधिकरण (एफबीए); श्री विनीत पांडे, सहायक निदेशक, भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (आईडब्ल्यूएआई) और केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के प्रतिनिधि उपस्थित थे। डॉ. दास ने फरक्का में गंगा नदी में हिल्सा पुनरुद्धार हेतु संस्थान के प्रयासों और डॉल्फिन संरक्षण की दिशा में की गयी नई पहल पर प्रकाश डाला। डॉ. दास ने गंगा नदी में डॉल्फ़िन परियोजना पर माननीय प्रधानमंत्री के कार्यक्रम पर विस्तार से

चर्चा की और मछुआरा समुदायों से डॉल्फ़िन और छोटे हिल्सा के पकड़ को रोकने के लिए आग्रह किया क्योंकि इसके कारण फरक्का बैराज में हिलसा उत्पादन में गिरावट देखने को मिल रहा है। साथ ही, फरक्का बैराज के ऊपरी भाग में हिलसा मात्स्यिकी पुनरउद्धार के लिए एफबीए के गेट नंबर 25 और 25ए पर बने फिशलॉक के नवीनीकरण का अनुरोध किया गया। एफबीए के महाप्रबंधक, श्री आर. अझगेसन ने मछुआरों को सलाह दी कि वे हिल्सा पकड़ने के लिए छोटे जालछिद्रों वाले जालों का उपयोग न करें। श्री अझगेसन ने आगे बताया कि मछली पकड़ने में जहरीली तत्वों के उपयोग से बैराज के निचले हिस्से का जल प्रदूषित और जहरीला होता जा रहा है, अतः उन्होंने सीआईएसएफ के प्रभारी को इस प्रक्रिया में शामिल लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का निर्देश दिया। श्री विनीत पांडे, सहायक निदेशक, आईडब्ल्यूएआई ने भी हिल्सा की घटती आबादी और नदी गंगा के प्रदूषण पर चिंता व्यक्त की। श्री पांडे ने कहा कि नए प्रस्तावित नौवाहन चैनल में फिश पास के डिजाइन से हिलसा को फीडर कैनल से गंगा नदी के मुख्य चैनल तक जाने में मदद मिलेगी। कार्यक्रम में संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक और समन्वयक, डॉ. ए. के. साहू ने मछुआरों से हिलसा सुधार कार्यक्रम और गंगा नदी में डॉल्फिन संरक्षण की दिशा में एनएमसीजी परियोजना में सहयोग के लिए आग्रह किया। डॉ. साहू ने बताया कि संस्थान उन्नत तकनीकों के माध्यम से गंगा नदी के मध्य खंड में हिल्सा मछली के जनसंख्या में सुधार के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है। इस कार्यक्रम में फरक्का बैराज के ऊपरी और निचले भाग और फीडर नहर से जुड़े लगभग 216 मछुआरों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास तथा जलशक्ति मंत्रालय के राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा अभियान परियोजना कर्मियों के द्वारा किया गया।

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने भारत का अमृत महोत्सव मानते हुए अनुसूचित जनजाति घटक के तहत मत्स्य पालन के सतत प्रबंधन के लिए हितधारकों की बैठक का आयोजन

संस्थान ने भारत का अमृत महोत्सव के एक हिस्से के रूप में अनुसूचित जन जातीय घटक के तहत देश के विभिन्न कोनों में मत्स्य पालन के स्थायी प्रबंधन के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में 22 सितंबर, 2021 को एक हितधारक बैठक का आयोजन किया। बैठक का मुख्य उद्देश्य अधिकतम उत्पादकता के साथ- साथ लाभप्रदता की वृद्धि करना था। इससे जुड़े संभावनाओं और लाभों के बारे में हितधारकों के साथ चर्चा की गई। इस बैठक में, हितधारक जनजातीय समुदायों से थे, जिन्हें संस्थान द्वारा देश के विभिन्न चयनित क्षेत्रों में समय-समय पर मछली के बीज, चारा, चूना, जाल, मूंगा, पेन, नाव आदि जैसे विभिन्न मत्स्य आदानों के साथ समर्थन दिया गया है। माननीय प्रधान मंत्री के 'किसानों की आय को दोगुना करने' और 'प्रति बूंद अधिक फसल' के प्रमुख कार्यक्रम को सहभागी मोड में प्राप्त करने के लिए, संस्थान आदिवासी समुदाय की स्थिति में सुधार करने के लिए लगातार काम कर रहा है।

विभिन्न राज्यों जैसे पश्चिम बंगाल, झारखंड, ओडिशा, गुजरात, केरल आदि से कुल 76 हितधारक (57 महिलाएं और 19 पुरुष) ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों

तरह से बैठक में उपस्थित थे। हितधारकों और संस्थान के वैज्ञानिकों के बीच एक संवाद सत्र आयोजित किया गया जहां उन्होंने अपने अनुभव

और भविष्य की गतिविधियों के लिए योजना बनाने के बारे में चर्चा की।संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी हितधारकों को अपनी मत्स्य पालन गतिविधियों में सुधार लाने के लिए सिफ़री के समर्थन को प्राप्त कर अधिक सक्रिय रूप से आगे आने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि उनकी आजीविका सुरक्षा को स्थायी तरीके से सुनिश्चित किया जा सके। डॉ. दास ने इस बात की भी पुष्टि की कि संस्थान आने वाले दिनों में एसटीसी (अनुसूचित जनजाति घटक) के तहत देश के दूरदराज के इलाकों में रहने वाले आदिवासी मछुआरों को अपना समर्थन देना जारी रखेगा, लेकिन साथ ही, उन्होंने लाभार्थियों से भी स्वयं सम्पूर्ण बनने का प्रयास जारी रखने का अनुरोध किया, ताकि हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के "आत्मनिर्भर भारत" के सपने को साकार किया जा सके। इस बैठक में डॉ. एस. सामंत, प्रभागाध्यक्ष,आरईएफ डिवीजन, डॉ. एम.ए. हसन, प्रभागाध्यक्ष, एफईएम डिवीजन, डॉ. यूके सरकार, प्रभागाध्यक्ष, आरडब्ल्यूएफ डिवीजन, डॉ. ए. के दास, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभारी, प्रशिक्षण और विस्तार इकाई , डॉ अपर्णा रॉय, सीनियर वैज्ञानिक, डॉ. लियांथुमलुइया और डॉ. एन. चानू, वैज्ञानिक उपस्थित थे। जबकि ऑफ़लाइन मोड में उपस्थित थे, डॉ. प्रीता पन्निकर, प्रभारी, बेंगलुरु क्षेत्रीय केंद्र, डॉ. डी. एन. झा, वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रभारी, प्रयागराज क्षेत्रीय केंद्र, डॉ. दीपा सुधेसन, वैज्ञानिक और प्रभारी अधिकारी, कोच्चि क्षेत्रीय केंद्र, डॉ. लोहित कुमार, वैज्ञानिक, वडोदरा क्षेत्रीय केंद्र। इसके अलावा, पश्चिम बंगाल के श्रीनिकेतन, बीरभूम जिले की महिला लाभार्थियों और पश्चिम बंगाल के सुंदरबन के सागर द्वीप, गोसाबा और पलोट घाट के लाभार्थियों ने अपनी मात्स्यिकी गतिविधियों से अधिक उत्पादन और लाभ प्राप्त करने में अपनी सफलता के बारे में बताया और उन्होंने इसका श्रेय संस्थान को दिया। संस्थान के निरंतर और प्रभावी समर्थन के कारण ही उनके लिए यह संभव हो सका। अंत में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं बैठक की समन्वयक डॉ. अपर्णा राय के धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक समाप्त हुई।

हिंदी सप्ताह समापन समारोह

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में हिंदी सप्ताह समापन समारोह दिनांक 21 सितम्बर, 2021 को ऑफलाईन/ऑनलाईन मोड में अपराह्न 4.00 बजे संस्थान के सभा कक्ष में मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुमेधा दास हिन्दी अनुवादक ने किया। सर्वप्रथम कार्यक्रम का स्वागत संबोधन श्री संजीव कुमार साहू, वैज्ञानिक नें हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के बारे में विधिवत जानकारी देकर किया।

इसके उपरान्त हिंदी सप्ताह समापन समारोह में संस्थान के सभी क्षेत्रीय केन्द्रों के कार्यकारी प्रभारियों ने अपना संबोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि कार्यालय काम काज में हिंदी का और अधिक प्रयोग करना चाहिए। क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी के कार्यकारी प्रभारी ने कहा कि वैज्ञानिक अविष्कारों को भारतीय आमजनों तथा किसानों तक पहुंचाने के लिए हिंदी भाषा ही सबसे सशक्त एवं प्रभावी माध्यम हो सकता है।

इस उपलक्ष्य में अपने विचार प्रकट करते हुए श्री राजीव लाल, संयुक्त निदेशक (प्रशासन) सह कुल सचिव ने कार्यालय में हो रहे हिंदी कार्यो पर संतोष व्यक्त किया और अनुरोध किया कि समस्त कार्मिकों को हिंदी भाषा में कार्यप्रणाली को बढ़ावा देना चाहिए।

श्री प्रवीण मौर्य, वैज्ञानिक ने हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित पांच प्रतियोगिताओं जैसे हिंदी निबंध, हिंदी अनुवाद, आशुभाषण, कार्य समीक्षा एवं काव्य पाठ के आयोजन एवं प्रतियोगितायों में विजयी प्रतिभागियों के पुरस्कार वितरण के लिए अपना संबोधन प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। संस्थान के अधिकारियों को परिषद द्वारा जारी दिशा-निर्देशों तथा हिंदी प्रोत्साहन योजना के तहत नकद पुरस्कार भी वितरित किए गए।

संस्थान के अधिकारियों को परिषद द्वारा जारी दिशा-निर्देशों तथा हिंदी प्रोत्साहन योजना के तहत नकद पुरस्कार भी वितरित किए गए।

निदेशक महोदय ने हिंदी प्रकाशन में उत्कृष्ठ कार्य करने वाले वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों को प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार राशि से सम्मानित भी किया।

निदेशक महोदय ने सभी प्रतिभागियों एवं विजेताओं को बधाई दी। उन्होंने कहा कि संस्थान के समस्त हिंदी प्रकाशन समय पर हो जाने चाहिए। हिंदी प्रकाशन कार्य के लिए समर्पित अधिकारियों/कर्मचारियों के योगदान की प्रशंसा की। उन्होने कहा कि सभी कर्मचारियों को अपना काम हिंदी में जारी रखना चाहिए।

डॉ. (श्रीमती) सुमन कुमारी, वैज्ञानिक ने सभा कक्ष में उपस्थित सहकर्मियों व ऑनलाईन मोड द्वारा उपस्थित संस्थान मुख्याल के सभी क्षेत्रीय केन्द्रों के कार्मिकों को धन्यवाद दिया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, द्वारा "विश्व नदी दिवस" का पालन

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने दिनांक 26 सितंबर, 2021 को फरक्का, पश्चिम बंगाल में गंगा नदी में "विश्व नदी दिवस" मनाया। इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य नदियों को स्वच्छ रखने और जलीय जैव विविधता के संरक्षण के लिए मछुआरों और आमलोगों में जागरूकता पैदा करना था। संस्थान ने जल शक्ति मंत्रालय के राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) परियोजना के अंतर्गत माननीय प्रधानमंत्री के डॉल्फिन संरक्षण कार्यक्रम के परिपेक्ष्य में मनाया। इसके अलावा, हिल्सा मछली जो वाणिज्यिक महत्वपूर्ण की एक अभिगमन करने वाली प्रजाति है और जिसका गंगा नदी में संरक्षण और प्रसार अत्यधिक आवश्यक है। संस्थान ने इस विशेष दिवस पर डॉल्फिन मछली और हिलसा मछली संरक्षण पर दो प्रमुख पहल किया तथा मछुआरों के साथ-साथ फरक्का के स्थानीय एवं आसपास के निवासियों को भी जागरूक किया। इस अवसर पर फरक्का बैराज के ऊपरी भाग में औसतन 250 ग्राम वजन के 78 वयस्क हिल्सा को गंगा नदी में राईंचिंग किया गया। मछुआरों को डॉल्फिन और हिल्सा संरक्षण पर पोस्टर और लीफलेट वितरित किए गए। साथ ही, संस्थान की टीम ने मछुआरों और स्थानीय निवासियों को जलीय पारिस्थितिकी तंत्र पर घरेलू और औद्योगिक मलजल का जलीय जैव विविधता पर हानिकारक प्रभाव के बारे में बताया और नदी के स्वास्थ्य में सुधार के उपायों का सुझाव दिया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में प्रधानमंत्री-कृषक संवाद केंद्रित कार्यक्रम

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने दिनांक 28 सितंबर 2021 को कृषकों में जलवायु पर जागरूकता पैदा करने के लिए जलवायु अनुकूल प्रजातियों, प्रौद्योगिकियों और पद्धतियों पर कृषक-वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम का आरम्भ 'जलवायु उन्मुख कृषि' पर एक पावरपॉइंट प्रस्तुति के साथ की गई। इसके बाद, भाकृअनुप-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान (ICAR-NABIM), रायपुर, छत्तीसगढ़ के उद्घाटन समारोह में माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी ने संबोधित किया, जिसमें संस्थान के किसानों, वैज्ञानिकों और अन्य कर्मचारियों ने भाग लिया। हमारे माननीय प्रधानमंत्री द्वारा विभिन्न फसलों की पैंतीस जलवायु अनुकूल किस्मों को राष्ट्र को समर्पित किया गया। इस अवसर पर देश के चार कृषि विश्वविद्यालयों को स्वच्छ हरित परिसर पुरस्कार प्रदान किया गया। माननीय प्रधानमंत्री जी ने पोषण सुरक्षा के लिए हमारे दैनिक खाद्यान्न में बाजरा के महत्व पर जोर देते हुए इसे हमारे आहार में शामिल करने के लिए कहा जिससे ग्रामीण स्वास्थ्य को और भी उन्नत किया जा सके। माननीय प्रधानमंत्री के साथ विचार-विमर्श से कृषक बहुत प्रसन्न हुए। इस कार्यक्रम में सामान्य तौर पर जलवायु अनुकूल कृषि और विशेषतः जलवायु-स्मार्ट मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर किसानों के ज्ञान का विस्तार किया गया। माननीय प्रधान मंत्री के सुझावों से आने वाले दिनों में किसानों की आय को दोगुना करने की दिशा में मार्ग प्रशस्त होगा। इस कार्यक्रम के बाद संस्थान में कृषक-वैज्ञानिक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें जलवायु परिवर्तन के कारण अन्तर्स्थलीय खुलाजल से जुड़े मछुआरों के सामने आने वाली समस्या के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। इस संवाद कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल के 103 किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम की परिकल्पना और क्रियान्वयन संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने किया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- ओडिशा के हीराकुंड जलाशय में मछली और मत्स्य पालन की स्थिति पर सर्वेक्षण से पता चला हैं की मछली पकड़ने के गियर "ड्रैग नेट" (मेष आकार 8-10 मिमी, लंबाई: 500-700 मीटर, गहराई: 10 -15 मीटर) के संचालन के कारण वर्षा के मौसम में गैर-विवेकपूर्ण उच्च तीव्रता (80 - 150 हॉल/दिन, सीपीयूई: 100-200 किग्रा/दिन) होती हैं। अध्ययन में गिल नेट (मेष आकार> 80 मिमी) का संचालन करने वाले मछुआरों के सीपीयूई (5 -15 से 2-5 किग्रा / नाव / दिन) में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई, जो सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय अस्थिरता की दृढ़ता को दर्शाता है, जिसमें और अधिक वैज्ञानिक और प्रशासनिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

- जलवायु परिवर्तनशीलता का सामना कर रहे *एम्बली फेरींगोडोनमोला* (मोलाकार्पलेट्ट) के प्रजनन पैटर्न को गंगा की निचली आर्द्रभूमि में मान्य किया गया था। सर्वेक्षण परिणामों से पता चला कि मछलियों में स्पॉनिंग निर्णय न तो पानी के तापमान और न ही वर्षा से प्रभावित होता है और व्यापक तापमान (22-33 डिग्री सेल्सियस) और वर्षा (0-800 मिमी) प्री-स्पॉनिंग फिटनेस (स्थिति कारक 1.12-1.25 यूनिट) बनाए रख सकता है। इससे यह पता चलता हैं की भविष्य की जलवायु परिवर्तनशीलता का सामना करते हुए भी इसके स्पॉन में कमी नहीं आएगी।

- पेंगासियस में एंटीबायोटिक फ्लोर्फेनिकॉल की जैव सुरक्षा के आकलन पर प्रायोगिक अध्ययन से पता चला है कि एंटीबायोटिक फ्लोर्फेनिकॉल के मौखिक प्रयोग से ल्यूकोपेनिया को छोड़कर बड़ी स्वास्थ्य समस्याएं पैदा नहीं हुई हैं, इससे यह सुझाव दिया जा सकता हैं कि कैटफ़िश पंगासियानोडोन हाइपोफथाल्मस में दवा उपयोग के लिए सुरक्षित है।

- ओडिशा के मयूरभंज जिले के सुनेई और कालो जलाशयों में खोजपूर्ण सर्वेक्षण और ऐतिहासिक डेटा विश्लेषण से स्टॉकिंग के सकारात्मक प्रभाव का इंगित मिलता हैं, जिससे मछली पकड़ने के पैटर्न से स्टॉक किए गए भारतीय प्रमुख कार्प के प्रभुत्व का संकेत भी मिलता हैं।

- अगस्त 2021 के महीने के दौरान गंगा नदी के बैरकपुर भाग में विभिन्न मछली लैंडिंग स्थलों से लगभग 116.17 किलोग्राम मछली लैन्डिंग होने का अनुमान लगाया गया है। प्रमुख मछली प्रजातियों में *पंगेसियस पंगेसियस* (39.8%) के बाद *रीटा रीटा* (33%) और हिल्सा (11.42%) दर्ज की गई है।

- वर्षा के मौसम के दौरान स्थानीय रूप से लोंगथ्राई (एक प्रकार का गोलाकार स्कूप नेट) नामक पारंपरिक मछली पकड़ने का तरीका मणिपुर में लोकतक झील, (एक रामसर साइट) में इस्तेमाल किया जाता हैं, जो कि सुबह के समय संचालित कीमती झींगे को पकड़ने में सहायक होता हैं। मछली पकड़ने की इस पद्धति का प्रति इकाई प्रयास प्रति दिन औसतन 5.7 किलोग्राम के साथ 1.5 से 10 किलोग्राम प्रति दिन के बीच था। मछली पकड़ने की यह प्रथा मछुआरों के लिए काफी फायदेमंद है क्योंकि झींगा का बाजार मूल्य लगभग ₹400/किलोग्राम है।

- वर्षा के मौसम के दौरान मछली प्रजातियों की विविधता दर्ज की गई । गंगा नदी के नरोरा से फ्रेजरगंज खंड तक - दर्ज की गई मछली प्रजातियों की विविधता:- प्रयागराज (55), मिर्जापुर (47), चुनार (34), वाराणसी (47), गाजीपुर (40) , बलिया (41), बक्सर (18), पटना (18), भागलपुर (16), फरक्का (6), जंगीपुर (10) और फ्रेजरगंज (21) क्रमशः गंगा नदी का क्षेत्र हैं।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने 24 अगस्त, 2021 को प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएसवाई) पर केंद्रीय स्थायी समिति (सीएससी) की छठी बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने एनआईसी एमओईएफसी द्वारा आयोजित 16वीं ईएसी - नदी घाटी और जलविद्युत परियोजनाओं की 7 सितंबर, 2021 के बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने डीडीजी (एफएस) की अध्यक्षता में 11 सितंबर, 2021 को मत्स्य पालन एसएमडी और संस्थानों के निदेशकों की मासिक बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने सरदार सरोवर बांध के डाउनस्ट्रीम नर्मदा नदी के ई-फ्लो पर 9 सितंबर 2021 को सरदार सरोवर नर्मदा निगम लिमिटेड, गांधीनगर के निदेशक और इंजीनियरों के साथ बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने 14 सितंबर 2021 को भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति संख्या VIII की XXVII बैठक में भाग लिया।

- निदेशक भाकृअनुप-सीआईएफआरआई ने 16 सितंबर 2021 को न्यूट्री-गार्डन और वृक्षारोपण अभियान के आयोजन पर चर्चा के लिए मत्स्य अनुसंधान संस्थानों के निदेशकों के साथ बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक ने 2 अगस्त, 2021 को भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन, कोलकाता की कार्यकारी समिति की सांविधिक बैठक में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने 14-15 सितंबर 2021 को कोलकाता में सीआईएफआरआई आर्गक्योर की लॉन्च बैठक में भाग लिया।

अन्य

- भारत @75 - आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाने के लिए 1 सितंबर, 2021 को संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में "एक्वाकल्चर में सिस्टम विविधीकरण" पर राष्ट्रीय अभियान के एक भाग के रूप में "अन्तर्स्थलीय खुले पानी में मछली उत्पादन में वृद्धि के लिए संलग्नक कल्चर" पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। जहां 200 से अधिक प्रतिभागी ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में मौजूद थे।

- 2023 के अंतर्राष्ट्रीय बाजरा वर्ष के एक भाग के रूप में, संस्थान द्वारा 17 सितंबर 2021 को मुख्यालय बैरकपुर और इसके क्षेत्रीय केंद्रों (प्रयागराज, गुवाहाटी, बेंगलुरु, वडोदरा, कोच्चि और कोलकाता) में पोषक-उद्यान और वृक्षारोपण (पोषण वाटिका और वृक्षारोपण महाभियान) पर एक अभियान का आयोजन किया गया। पश्चिम बंगाल के चमरदाहा और चमता बील, असम के घोरजन बील, प्रयागराज के रसूलाबाद घाट, क्षेत्रीय केंद्र, बंगलौर में 317 फलों के पौधे रोपने के अलावा बाजरा उत्पादों के माध्यम से पोषण पर जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया और इस अवसर पर मछुआरों के परिवारों में विभिन्न बाजरा उत्पादों का भी वितरण किया गया।

- 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत 'फिट इंडिया फ्रीडम रन 2.0' का आयोजन 9 और 18 सितंबर 2021 को संस्थान से राज्य पुलिस अकादमी, बैरकपुर तक किया गया। इस कार्यक्रम में 150 से अधिक स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया।

- नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत विभिन्न स्थानों फरक्का, मुर्शिदाबाद और गोदाखली में हिल्सा संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इन जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से 789 मछुआरों को जागरूक किया गया।

- अगस्त 2021 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से 09.8 टन मछली लैंडिंग का अनुमान किया गया था। पिछले महीने की तुलना में कुल मछली पकड़ने में लगभग 70% की वृद्धि हुई है। बाद विदेशी मछलियों की संख्या कम था, और कैट फिश की संख्या सबसे कम था। विदेशी मछलियों के बीच कॉमन कार्प हावी रहा।

प्रशिक्षण

- भारत @75 - आजादी का अमृत महोत्सव मनाने के लिए "एक्वाकल्चर में सिस्टम डायवर्सिफिकेशन" पर राष्ट्रीय अभियान के एक भाग के रूप में, 1 सितंबर, 2021 को संस्थान के रिसर्च स्टेशन, कोच्चि द्वारा कांजीरापुझा जलाशय, केरल में एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें लगभग 46 आदिवासी मछुआरों ने भाग लिया।

- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने 7 सितंबर 2021 को बामुनी बील में और 8 सितंबर, 2021 को चरण बील में पेन में मछली की रिहाई के अवसर पर "फील्ड डे" का आयोजन किया। कुल 205 आदिवासी परिवारों (बोडो समुदाय से संबंधित) जिसमें बामुनी के 65 परिवार और चरणबील के 140 परिवार ने इस कार्यक्रम से लाभ उठाया है।

सम्पादक मण्डल

सम्पादक मण्डल की ओर से आप समस्त पाठकों के सामने पंचम वर्ष का प्रथम अंक प्रस्तुत है। आप सभी के बहुमूल्य सुझाव के लिए हार्दिक धन्यवाद। आगे भी आप सभी का सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा। सम्पादक मण्डल की तरफ से सभी पाठकगण को शुभकामनाएँ!

Get Covid shot and inspire others, this is not the time to lower guard, says President Kovind in his I-Day address, P12

SUNDAY TIMES OF INDIA

Bennett, Coleman & Co. Ltd

HAPPY INDEPENDENCE DAY

AUGUST 15, 2021 | PAGES 104 | INCLUDING CALCUTTA TIMES

INDIA'S LARGEST ENGLISH NEWSPAPER

VOL. XXI NO. 32 KOLKATA

LEADERS OF CHANGE

Striding Towards Second Blue Revolution

Since its inception, Indian Council of Agricultural Research-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI) has been instrumental in developing epoch-making inventions in the inland fishery sector

Call of Conservation

The institute will achieve the national mission and contribute towards sustainable development to eradicate poverty and cater to the fishermen community, opines **Dr BK Das**, director, Indian Council of Agricultural Research-Central Inland Fisheries Research Institute

पुष्टि सुरक्षाय छोटो माछेर भुमिका

आई.सि.ए.आर-सिफरि दीर्घ एक दशर माछेर पुष्टिगुण विषयरे विषयरे गवेषणा करे १००टि माछेर पुष्टिगुण-प्रोटिन फाटि इत्यादिर परिमाण लिपिवद्ध करेछे। आमादेर देशे पुष्टि सुरक्षार दिक थेके एखन अनेक पिछनेर सारिते रयेछे। ग्लोबाल हान्गार इनडेक्स २०२० अनुयायी भारतवर्ष वर्तमाने १०५टि अंशग्रहणकारी देशेर मध्ये ९४तम स्थाने रयेछे।

भारतवर्षेर पुष्टि सुरक्षाय माछ, विशेषत छोटो माछगुलि विशेष भुमिका निते पारे,। नदी, खाल, बिल, डोबाय मौरला, पुंटि, शिंगि, फालुई, कई, काचुलि इत्यादि विभिन्न माछ आमरा पेरे थाकि येगुलि पुष्टिगुणे भरपुर। आमादेर परिचित किछु माछे प्रोटिनेर परिमाण तादेर शरीरेर ओजनेर शतांशेर हिसेबे - काचला-१७ शतांश, मृगेल-१५.५ शतांश, आर-११ शतांश, रिठा-११.५ शतांश, छिलन-११.५ शतांश, पारशे-२२.७ शतांश, चितल-२२ शतांश, भोला-२०.७ शतांश, फालुई-१७ शतांश, कई-१७.१ शतांश।

काचुलि माछे उपादान लिप्त रयेछे एवं मौरला पुंटिते प्रचुर परिमाणे भिटामिन डि, के ও आयरन रयेछे। ताछाड़ा मौरला माछे भिटामिन-एर परिमाण प्राय १९६० माइक्रोग्राम। रातकाना रोग नियन्त्रणे मौरलार उपयोगीता निये परीक्षामुलक काजও हयेछे। माछगुलितें क्यालसियामेर परिमाण बेशि हओयाय एगुलि शरीरे क्यालसियामेर घाटति मेटाते साहाय्य करे, यार परीक्षामुलक प्रमाण आई.सि.ए.आर-सिफरि सुन्दरबनेर 'निउट्रिश्मार्ट विलेज' प्रकल्पेर माध्यमे पेयेछे। गत १०-१२ आगष्ट तारिखे, 'म्यानेज' हायद्राबादेर सहयोगीतायं आई.सि.ए.आर-सिफरि छोटो माछेर उपयोगीता ও पुष्टि सुरक्षाय छोटो माछेर भुमिकार ওपरे तिन दिन व्यापी एकटि अनलाइन प्रशिक्षण शिविर आयोजन करेछिल। ड. बि.के. दासेर, निर्देशक, आई.सि.ए.आर-सिफरि पथ निर्देशनेर ड. अपर्णा राय, ড. এ. কে. বেরা ও श्रीमती प्रज्ञा बेरेरा एई ट्रेनिंगटि परिचालना करेछेन। ट्रेनिंगटिते देशेर २३टि राज्य थेके १৩৫ जन अंशग्रहण करेछिलेन।

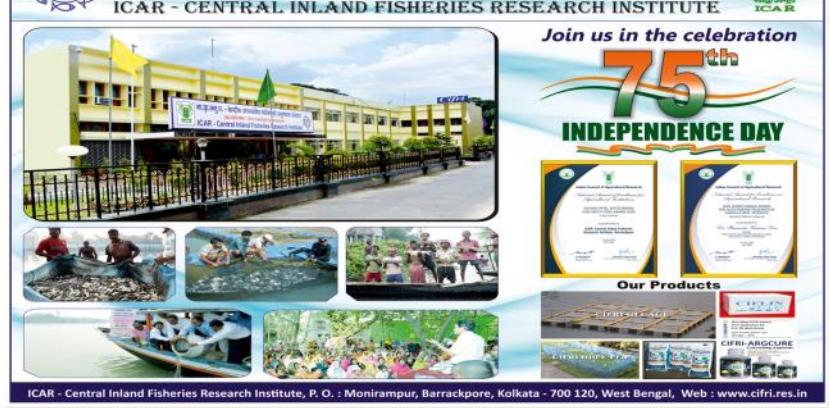
भा. कृ. अनु. पु. – केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान

AN ISO 9001 : 2015 Certified Organization

ICAR - CENTRAL INLAND FISHERIES RESEARCH INSTITUTE

Join us in the celebration 75th INDEPENDENCE DAY

Our Products

ICAR - Central Inland Fisheries Research Institute, P. O. : Monirampur, Barrackpore, Kolkata - 700 120, West Bengal, Web : www.cifri.res.in

বর্তমান

পুষ্টিগুণে রুই-কাতলাকে টেক্কা চুনোপুঁটির

জলরাশ নিয়েগী • ব্যারাকপুর

সমীক্ষা সিফরির

योजना • अमृत महोत्सव योजना के तहत हजारीबाग समेत राज्य भर में मछली उत्पादन बढ़ाने की तैयारी

जलाशयों में बढ़ेगा मछली उत्पादन, लगेंगे 8 पेन कल्चर

भास्कर न्यूज | हजारीबाग

अमृत महोत्सव योजना के अंतर्गत हजारीबाग जिला में मछली उत्पादन बढ़ाने की तैयारी की जा रही है। अमृत महोत्सव योजना के अंतर्गत हजारीबाग सहित झारखंड के पांच जिलों के 18 जलाशयों में 36 पेन लगाया जाना है। इस कार्यक्रम के तहत हजारीबाग जिला अंतर्गत लोटवा, जरहिया, केरेडारी एवं घाघरा डैम में कुल 08 यूनिट पेन कल्चर लगाया जाएगा। हजारीबाग जिले में आईसीएआर सीआईएफआरआई के सहयोग से

जलाशयों के भ्रमण के दौरान आईसीएआर के वैज्ञानिक दल व अन्य।

का भ्रमण किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान आईसीएआर-सीआईएफआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डा ए के दास एवं डा राजू

मछली पालन का कार्य भी सफलता पूर्वक किया जा रहा है। कहा कि जलाशय में अगर वैज्ञानिक विधि से नियमित रुप से मत्स्य अंगुलिका

इसके साथ ही जलाशयों पर निर्भर मछुआरों, मत्स्य उत्पादकों एवं मत्स्य विक्रेताओं की आय में वृद्धि होगी। जिला मत्स्य पदाधिकारी रौशन कुमार ने बताया कि इस योजना में प्रत्येक पेन के लिए 47 हजार रुपये राशि निर्धारित है। इसके अतिरिक्त मत्स्य अंगुलिकाओं पर 25 हजार रुपये तथा एक टन मत्स्य आहार उपलब्ध कराया जाएगा। निर्मित पेन कल्चर से एक चक्र (दो महीना) में 2.25 लाख फिंगरलिंग तैयार होगा। इस योजना का लाभ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के मत्स्यजीव

खेल दिवस पर टेबल टेनिस टूर्नामेंट का हुआ आयोजन

हजारीबाग | राष्ट्रीय खेल व मेजर ध्यानचंद के जन्मदिवस के अवसर पर जिला टेबल टेनिस संघ ने एक दिवसीय अंतर जिला टेबल टेनिस टूर्नामेंट का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि उपविकास आयुक्त अभय कुमार सिंह को संघ के महासचिव भैया मुरारी का स्वागत किया। प्रतियोगिता में बॉयज यूथ सिंगल में प्रथम स्थान कुमार श्रेष्ठ, द्वितीय स्थान सत्यम सुभांशु, जूनियर बॉयज सिंगल में प्रथम प्रतीक

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः उत्पन्न नहीं की जा सकती है